कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 29–30

वर्मीवास या वर्मी नीथार

डॉ. रिंकेश सिटोले[1] एवं केशरीनाथ त्रिपाठी[2]

[1]सहायक परियोजना प्रबंधक (कृषि), अर्पण सेवा संस्थान, सीहोर

[2]सहायक प्रोफेसर, एल.एन.सी.टी. विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश 485334, भारत।

Email Id: – rinkeshsitole@gmail.com

यह एक प्रकार का जैविक टॉनिक है जो की वर्मी बेड से प्राप्त तरल पदार्थ है, यह तरल पदार्थ के रूप मे निकलता है। जो वर्मी बेड में गोबर में सिंचाई के दौरान केंचुए की त्वचा से टच होकर के जो पानी प्राप्त होता है साथ ही गोबर में उपस्थित विभिन्न प्रकार के पोषक तत्वों आदि को मिला करके निकलने वाला तरल पदार्थ वर्मीवास कहलाता है। इसकी खासियत यह है कि यह केंचुए की बाहरी त्वचा से टच होकर के निकलता है जिसमे ऑक्सीन हारमोंस की उपस्थित होती है। जो एक वृद्धिकारक हारमोंस कहलाता इसलिए यह अत्यधिक फसलों की वृद्धि, मिट्टी की उर्वरता, उत्पादकता, आदि में सहायक है।

एकत्रीकरण –

उपरोक्त तरल पदार्थ को जब वर्मी कंपोस्ट बेड में गोबर भर दिया जाए जो कि ऊपर से 4 से 6 इंच खाली रहे तत्पश्चात पानी डालकर गोबर के अंदर उपस्थित गरम CO_2 को वाष्पोत्सर्जित कर दें। इसका मुख्य कारण यह है कि यह केंचुए जीवन निर्वाह करने से रोकेगी नहीं स या उसके जीवन में कोई रुकावट नहीं डालेगी स तत्पश्चात गोबर अच्छा सा ठंडा होने के बाद में एक बेड में दो किलोग्राम केचुआ डाल दे, जो की खाद बनाने के लिए पर्याप्त है। इसके उपरांत बेड को टाट के बोरे से ढक दें, तथा प्रतिदिन शाम के समय बोरे को गिला करते रहे तत्पश्चात खाद बनने की प्रक्रिया प्रारंभ होकर प्रथम परत 15 से 20 दिन में बनकर के तैयार हो जाएगी जिसकी मोटाई तीन से चार इंच रहेगी किसान को याद रहे इस परत को वह आसानी से इकट्ठा कर सकता है ध्यान रहे केचुआ बाहर न जाने पाए इसके लिए रेत चलने की सहायता से छान करके केंचुआ एवं खाद अलग कर सकते है। इसी प्रकार से द्वितीय, तृतीय परत बनाकर के पूर्णतया वर्मी कंपोस्ट खाद, 85 – 90 दिन में बंनकर तैयार हो जाती है। एक वर्मी कंपोस्ट बेड जिसका आकार 12/4/2.5 हो उसमें एक मानक के आधार पर 4.5–5 कू. खाद बनकर तैयार होती है। इसमें सिंचाई के दौरान जो पानी बह कर बाहर पाइप के

माध्यम से किसी पात्र मे एकत्रित करता है उसे वर्मीवास कहते हैं। जो की एक जैविक टॉनिक का काम करता है रिफरेंस के तौर पर हम बात करें तो सीहोर जिले के राजू खेड़ी, लौंदिया, निपानिया, छापरी कल, मीरगंज जैसे अन्य गांव में भी प्रयोग कर लगभग 8 से 10 फसलों पर इसके परिणाम धनात्मक देखे गए। जिससे किसान इसकी एवं संस्था की सराहना कर रहा है एवं मार्केट भाव से दवाई लाने के बजाय यह उनको अधिक फायदेमंद लगती है जो की रसायन मुक्त है साथ ही किसान की आमदनी में बढ़ोतरी भी करती है।

प्रयोग विधि –

इसका प्रयोग फसल पर स्प्रेयर की सहायता से छिड़काव कर सकते हैं। जहाँ एक पंप जो की 15 –20 लीटर का हो में 1 से 1. 5 लीटर वर्मीवास मिलाये तथा फसल अवधि के आधार पर फसल एक महीने की है तब 1 लीटर में 10 लीटर पानी अगर फसल 20 दिन की है तो 1 लीटर में 12 लीटर पानी अगर फसल एक सप्ताह की है तो 1 लीटर में 15 लीटर पानी मिलाकर के छिड़काव करें, छिड़काव करते समय ध्यान रहे पौधा पूर्णतया भीग जाए पौधे की हर पत्ती, शाखा, ऊपरी, निचली परत पर सही से दवाई पहुंच जाए, तभी पौधा आसानी से अपने जीवन संबंधित संपूर्ण क्रियाएं निरंतर करता रहेगा एवं उसको किसी भी तरह के पोषक तत्व आदि की कमी नहीं होगी। हफ्ते में एक या दो बार अवश्य करें, किसान को ज्यादा फायदेमंद होगा।

प्रायोगित फसले –

भिंडी, बैगन, टमाटर, मिर्ची, गिलकी, लौकी, ककड़ी, करेला, गेहूं, सोयाबीन,आम, अमरूद आदि।

लाभ–

- मृदा स्वास्थ्य में सुधार
- मृदा उत्पादकता में वृद्धि
- वातावरण शुद्धता की प्राप्ति
- मनुष्य स्वास्थ्य में सुधार
- आय के स्रोत
- व्यय में कमी
- जोखिम आदि की कमी

सावधानियां –

- वर्मीवास एवं जल का अनुपात सही रखें।
- फसल उम्र के आधार पर विलेन बना है।
- स्प्रे करते समय ध्यान रहे संपूर्ण पौधा अच्छे से भीग जाए जिसमें पत्ती के दोनों सतह पर बराबर मात्रा में दवाई पहुंचे।
- पंप को पानी से पहले साफ कर ले जिससे नोजल में कचरा ना फंसे।
- वर्मीवास को पंप में डालने से पहले एक कपड़ा रख ले जिससे पानी छानकर के अंदर स जाएगा।